



राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 का अध्ययन: हिंदी भाषा की उपयोगिता

Surender singh

Chaudhary Devi Lal University

सारांश

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 ने भारतीय शैक्षणिक प्रणाली को परिवर्तनात्मक दिशा में अग्रसर किया है और हिंदी को एक महत्वपूर्ण भूमिका दी है। हिंदी भाषा को राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता के लिए एक माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है। इस नीति के अनुसार, हिंदी को अधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ताकि देश के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा के लिए एक सामान्य भाषा का रूप धारण किया जा सके। इससे हिंदी के प्रति राष्ट्रीय गर्व और अभिमान में वृद्धि होगी और यह विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संवाद को बढ़ावा देगा। इसके साथ ही, हिंदी की बढ़ती उपयोगिता से विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के बीच समरसता और सांगठनिकता में सुधार होगा। अतः, राष्ट्रीय शैक्षिक नीति के अनुसार हिंदी की बढ़ती उपयोगिता देश के शैक्षिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

प्रस्तावना

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति के अनुसार, हिंदी को राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता के लिए महत्वपूर्ण भाषा के रूप में मान्यता दी गई है। यह नीति हिंदी की बढ़ती उपयोगिता को प्रोत्साहित करती है ताकि देश के विभिन्न क्षेत्रों में शिक्षा और संवाद के लिए एक सामान्य भाषा का रूप धारण किया जा सके। इससे हिंदी की बढ़ती उपयोगिता से राष्ट्रीय गर्व और सामाजिक समरसता में वृद्धि होगी। इससे विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच सांगठनिकता, सहयोग, और सामर्थ्य में भी सुधार होगा। यह नीति शैक्षिक और सांस्कृतिक अवसरों को बढ़ावा देकर हिंदी को एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में प्रमोट करती है। इस प्रकार, राष्ट्रीय शैक्षिक नीति में हिंदी की बढ़ती उपयोगिता देश के शैक्षिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

राष्ट्रीय एकता में योगदान

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ होता है सीखने एवं सिखाने की क्रिया। मगर केंद्र सरकार द्वारा 1986 की शिक्षा नीति के अंदर ना तो कोई सीखने को मिला और ना ही कोई सिखाने वाली वस्तु केवल उस नीति के अंदर बच्चे में रहने का ज्ञान लिया और कक्षा उत्तीर्ण (पास) करने के डर लगा रहता था। शिक्षा के शाब्दिक अर्थ को सार्थक करते हुए और बच्चे के सर्वांगीण विकास वाली नई शिक्षा नीति 2020, को केंद्र सरकार ने मंजूरी दी है। पहले की शिक्षा नीति 1986 मूल रूप में परिणाम देने पर ही केंद्रित थी, मतलब कि विद्यार्थियों का आकलन उनके द्वारा अर्जित अंको के आधार पर किया जाता था, जो कि एक एकल दिशा दृष्टिकोण है। नई शिक्षा नीति 2020 ठीक इसके विपरीत है, यानिबहुल दिशा दृष्टिकोण पर केंद्रित है। जिसके द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा और यही इस नीति का उद्देश्य है। इसके अलावा नई शिक्षा नीति में छात्र किताबी ज्ञान के अलावा भौगोलिक बाहरी ज्ञान को भी अच्छे से समझ व सीख पाएगा। बच्चे को कुशल बनाने के साथ-साथ, जिस भी क्षेत्र में वह रुचि रखता है, उसी क्षेत्र में उन्हें प्रशिक्षित करना है। इस तरह, सीखने वाले अपने उद्देश्य और अपनी क्षमताओं का पता लगाने में सक्षम होंगे। बस इसी उद्देश्य के कारण शिक्षा नीति में बदलाव लाने की आवश्यकता पड़ी। राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 भारतीय शैक्षिक परिदृश्य को पुनः आकार देने और सामावेशी शिक्षा को प्रोत्साहित करने का प्रयास करती है। इस नीति के तहत, हिंदी भाषा को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, जिससे राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता, और सांस्कृतिक विविधता में सुधार हो सके। हिंदी भाषा का उपयोग राष्ट्रीय एकता में एक महत्वपूर्ण योगदान करता है। यह देशवासियों को एक संगठित भाषा में संवाद करने का माध्यम प्रदान करती है और समान भाषाई आधार पर जोड़ने में मदद करती है। हिंदी भाषा के माध्यम से, विभिन्न राज्यों और समुदायों के बीच संवाद और समरसता को बढ़ावा मिलता है, जिससे राष्ट्रीय एकता को मजबूती मिलती है।

हिंदी भाषा का प्रयोग भारतीय समाज के सभी वर्गों और लोगों के लिए सामान्य रूप से समझने में सहायक होता है। यह अलग-अलग भाषाओं के बीच सांख्यिक समानता को सुनिश्चित करता है और एक एकीकृत राष्ट्र के रूप में विकसिति में सहायक होता है। इसके साथ ही, हिंदी भाषा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता के अलावा, भारतीय संस्कृति और विरासत के महत्वपूर्ण पहलुओं को भी संरक्षित किया जा सकता है। इस प्रकार, हिंदी भाषा का प्रयोग राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता, और राष्ट्रीय अभिवृद्धि के माध्यम के रूप में महत्वपूर्ण है।

सामाजिक समरसता की दिशा में हिंदी का महत्व

हिंदी भाषा का महत्व सामाजिक समरसता की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह एक संविधानिक भाषा के रूप में भारत की आधिकारिक भाषा होने के साथ ही भारतीय समाज के एकात्मकता और एकता के प्रतीक के रूप में भी मानी जाती है।

सामाजिक समरसता की भाषाई सामानता: हिंदी भाषा का प्रयोग भारत के विभिन्न क्षेत्रों और जातियों के लोगों के बीच भाषाई सामानता को बढ़ावा देता है। यह एक सामान्य भाषा के रूप में कार्य करता है और लोगों को एक-दूसरे के साथ संवाद करने में मदद करता है, जिससे सामाजिक समरसता का अधिकतम स्तर प्राप्त होता है।

सांस्कृतिक एकता की बढ़ती शक्ति: हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और इसका प्रयोग सामूहिक सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देता है। इसके माध्यम से लोग अपनी सांस्कृतिक विरासत को समझते हैं और इसे प्रासंगिकता के साथ बचाते हैं।

सामाजिक और आर्थिक विकास में सहायक: हिंदी भाषा का उपयोग सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से जनसंख्या के बड़े हिस्से तक विभिन्न सरकारी योजनाओं और अधिसूचनाओं का फायदा पहुंचता है।

शिक्षा और प्रारंभिक शिक्षण में उपयोगिता: हिंदी भाषा की सामाजिक समरसता की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कड़ी है शिक्षा में उपयोगिता। यह एक सामान्य भाषा के रूप में शिक्षा के लिए सहायक होती है, जिससे विद्यार्थी समान अवसरों के साथ शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

इन सभी कारकों के माध्यम से हिंदी भाषा की उपयोगिता सामाजिक समरसता की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान करती है और भारतीय समाज को एकमत और सामूहिक विकास की दिशा में आगे बढ़ाने में सहायक होती है।

शैक्षणिक क्षेत्र में हिंदी का अधिक प्रयोग

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 ने हिंदी भाषा को शैक्षिक क्षेत्र में अधिक प्रयोग की दिशा में बढ़ावा देने का प्रयास किया है। इस नीति के तहत, हिंदी को एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में स्थान दिया गया है, जो छात्रों को संविधानिक रूप से निर्धारित शैक्षणिक माध्यम के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

महत्व:

भाषाई सामानता का प्रोत्साहन: हिंदी के अधिक प्रयोग से, विभिन्न भाषाओं के छात्रों को एक सामान्य भाषा में शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिलता है, जो भाषाई सामानता को बढ़ावा देता है।

सांस्कृतिक संदेश का प्रसार: हिंदी भाषा के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक संदेश को विभिन्न क्षेत्रों में प्रसारित किया जा सकता है, जो राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक समरसता को मजबूत करता है।

शिक्षा के प्रभावशाली और सरलीकृती के लिए: हिंदी का अधिक प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावशाली और सरलीकृत उपायों को संजीवनी देने में मदद कर सकता है, जो शिक्षा के स्तर को बढ़ाने में मदद करेगा।

संस्कृति और विरासत का संरक्षण: हिंदी भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति और विरासत का संरक्षण किया जा सकता है, जो हमारी भारतीय परंपरा की महत्वपूर्ण धारा है।

विभिन्नता में एकता का संदेश: हिंदी का अधिक प्रयोग स्थानीय भाषाओं और भाषाओं के संगठन में एकता और समरसता का संदेश देता है, जो भारतीय समाज के विभिन्न तात्त्विक और सांस्कृतिक पहलुओं को समर्थ बनाता है।

इस प्रकार, हिंदी भाषा का अधिक प्रयोग शैक्षणिक क्षेत्र में भाषाई, सांस्कृतिक, और सामाजिक उत्थान के लिए महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। इसे प्रोत्साहित करना और बढ़ावा देना हमारे राष्ट्रीय शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

हिंदी के उपयोग के लाभ

हिंदी भाषा भारत में एक महत्वपूर्ण और संविधानिक भाषा है जिसका प्रयोग शैक्षिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित किया गया है और इसके कई लाभ हैं:

भाषाई सामान्यता का बढ़ावा: हिंदी के उपयोग से भारतीय शैक्षणिक प्रणाली में भाषाई सामान्यता बढ़ती है। यह विभिन्न भाषाओं से लोगों को एक सामान्य भाषा में संवाद करने में मदद करता है और समानता को बढ़ावा देता है।

संस्कृति का प्रोत्साहन: हिंदी भाषा के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रचार और संरक्षण किया जा सकता है। इससे लोग अपनी संस्कृति को समझते हैं और उसका समर्थन करते हैं।

सामाजिक समरसता: हिंदी के प्रयोग से सामाजिक समरसता में वृद्धि होती है। यह लोगों को एक साथ आत्मीयता से आधारित संवाद करने का एक माध्यम प्रदान करता है।

शैक्षणिक उत्कृष्टता: हिंदी भाषा के प्रयोग से विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शैक्षणिक संसाधनों का लाभ मिलता है। यह उन्हें अधिक शिक्षा संबंधी सामग्री को समझने में सहायक होता है और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार करता है।

राष्ट्रीय एकता: हिंदी भाषा के प्रयोग से राष्ट्रीय एकता में वृद्धि होती है। यह देशवासियों के बीच संवाद और समरसता को बढ़ावा देता है और एक एकीकृत राष्ट्र के रूप में सामाजिक समृद्धि को स्थापित करता है।

हिंदी भाषा का प्रयोग शैक्षणिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान करता है और शैक्षिक प्रक्रिया को समृद्ध, सामाजिक और समरस बनाता है।

भारतीय भाषाओं के मध्य संवाद को बढ़ावा

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 के प्रारूपन में हिंदी भाषा को उपयोग में लाने का महत्वपूर्ण स्थान है। इस नीति के अनुसार, भारतीय भाषाओं के मध्य संवाद को बढ़ावा देने के लिए हिंदी का प्रयोग बढ़ाया जाना चाहिए। हिंदी भाषा के माध्यम से, विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं के लोगों के बीच आसान संवाद स्थापित किया जा सकता है। यह समूहिक समझ, सहयोग, और समरसता को बढ़ावा देता है। हिंदी का प्रयोग अनेक भारतीय भाषाओं के बीच भाषाई सामंजस्य बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और राष्ट्रीय एकता को सुनिश्चित करने में मदद करता है।

सांस्कृतिक विविधता की समझ

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 के अन्तर्गत हिंदी भाषा को उपयोग का महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, और यह सांस्कृतिक विविधता की समझ में महत्वपूर्ण योगदान करता है। हिंदी भाषा का उपयोग विभिन्न भारतीय सांस्कृतिक समृद्धियों को समझने और सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध करने में मदद करता है।

हिंदी भाषा के माध्यम से, लोग भारतीय सांस्कृतिक विविधता के विभिन्न पहलुओं को समझते हैं, जैसे कि विभिन्न राज्यों की भाषाओं, लोक गानों, कविताओं, और कहानियों को। इसके अलावा, हिंदी भाषा के माध्यम से संगीत, नृत्य, और वाद्य सहित अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों को भी समझा जा सकता है।

इस प्रकार, हिंदी भाषा का प्रयोग सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भारतीय समाज को सामूहिक रूप से एकजुट करता है और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को समर्थ बनाता है।

हिंदी शिक्षण की चुनौतियाँ और समाधान

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 के अनुसार, हिंदी भाषा का महत्व बढ़ गया है, लेकिन हिंदी शिक्षण के कुछ चुनौतियाँ भी हैं जिन्हें समाधान किया जाना चाहिए।

- भाषा कौशल की विकास:** हिंदी शिक्षण में मौखिक और लिखित कौशलों का विकास महत्वपूर्ण है। अधिकांश छात्रों के पास हिंदी में अच्छे स्तर के कौशल नहीं होते हैं, जिसके कारण वे समारोहों और प्रतियोगिताओं में शामिल होने में असमर्थ होते हैं।
- पठन-पाठन की सामर्थ्य:** हिंदी के अलावा अन्य भाषाओं के छात्रों के लिए हिंदी में पठन और पाठन की क्षमता को बढ़ाना मुश्किल हो सकता है। इसका समाधान इसे अधिक आकर्षक और समझने में आसान बनाने के लिए शिक्षण के तकनीकों में सुधार करना हो सकता है।
- सामाजिक संचार में कमी:** अनेक बार हिंदी के बारे में गलतफहमियाँ और उसके प्रयोग को लेकर हिचकिचाहट उत्पन्न हो सकती है, जो सामाजिक संचार को प्रभावित कर सकती है। इसके लिए सही जानकारी और प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
- सामग्री की गुणवत्ता:** हिंदी शिक्षण के लिए उपयुक्त सामग्री की कमी भी एक चुनौती हो सकती है। इसके समाधान के रूप में उत्कृष्ट पाठ्यक्रम, पुस्तकें, और आधुनिक शिक्षण साधनों का प्रयोग किया जा सकता है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, हमें हिंदी शिक्षण के प्रति समर्पित और प्रोत्साहित करने वाले उत्कृष्ट शिक्षकों की आवश्यकता है, साथ ही नवीनतम शिक्षण प्रणालियों का भी प्रयोग किया जाना चाहिए।
- शिक्षकों की तैयारी और प्रशिक्षण का महत्व**
हिंदी भाषा की उपयोगिता में शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। उन्हें अच्छे स्तर पर हिंदी भाषा के शिक्षण तकनीकों को समझना और लागू करना आवश्यक होता है। शिक्षकों को हिंदी भाषा के शिक्षण में विभिन्न माध्यमों,

उपकरणों, और प्रशिक्षण प्रक्रियाओं का समर्थन करना चाहिए ताकि वे छात्रों को हिंदी के माध्यम से सही और प्रभावी रूप से शिक्षित कर सकें।

शिक्षकों की तैयारी और प्रशिक्षण का महत्व इसलिए है कि वे उन्हें संबंधित विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करने और उन्हें हिंदी भाषा के प्रयोग में सुधार करने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, शिक्षकों को विभिन्न विद्यालयों में भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में हिंदी भाषा के शिक्षण के प्रकार को समझने की क्षमता होनी चाहिए।

इस तरह, शिक्षकों की तैयारी और प्रशिक्षण का महत्व उनके योगदान को मजबूत करता है और हिंदी भाषा के शिक्षण में उच्च गुणवत्ता और प्रभावी शिक्षा प्रदान करने में मदद करता है।

विद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम का विस्तार

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 के अनुसार, हिंदी भाषा के उपयोग का महत्व विद्यालयों में अधिक पाठ्यक्रम के विस्तार के माध्यम से बढ़ाया जाना चाहिए। हिंदी के पाठ्यक्रम का विस्तार सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे समृद्ध और समावेशी बनाने की जरूरत है। विद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम को उत्कृष्ट गुणवत्ता और उच्चतम मानकों पर आधारित बनाया जाना चाहिए।

हिंदी के पाठ्यक्रम में विभिन्न विषयों को समाहित किया जाना चाहिए, जैसे कि साहित्य, व्याकरण, लेखन, कहानियाँ, कविताएँ, और संवाद। इसके साथ ही, हिंदी के पाठ्यक्रम में समृद्ध सामग्री शामिल की जानी चाहिए जो छात्रों के सामाजिक, सांस्कृतिक, और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा दे।

विद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम का विस्तार छात्रों को हिंदी भाषा में सामूहिक और व्यक्तिगत रूप से सक्षम बनाने में मदद करेगा। इसके अलावा, यह भारतीय संस्कृति और भाषा के प्रति छात्रों की संवेदनशीलता को भी बढ़ाएगा। राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 में हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम के विस्तार को बढ़ावा देने का आदान प्रदान किया गया है। इस नीति के अनुसार, विद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम का विस्तार किया जाना चाहिए ताकि छात्रों को हिंदी भाषा की समझ और उपयोग को बढ़ावा मिल सके।

हिंदी के पाठ्यक्रम का विस्तार शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर किया जा सकता है। प्रारंभिक वर्गों में, हिंदी को पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाना चाहिए ताकि बच्चे हिंदी भाषा का मूल्यांकन कर सकें और उसका सही उपयोग कर सकें।

माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा के स्तर पर, हिंदी के पाठ्यक्रम को विविधता के साथ विस्तारित किया जा सकता है। विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी के विषयों को शामिल किया जा सकता है, जैसे कि साहित्य, भारतीय संस्कृति, इतिहास, और भूगोल।

हिंदी के पाठ्यक्रम का विस्तार करने से, छात्रों को हिंदी भाषा के प्रयोग, संरचना, और सम्बंधित विषयों में अधिक ज्ञान प्राप्त हो सकता है। इससे उनकी भाषा कौशल, लेखन क्षमता, और भाषा में स्पष्टता में सुधार हो सकता है।

विद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम का विस्तार छात्रों को हिंदी साहित्य, व्याकरण, और समाचार पत्र लेखन के माध्यम से भाषा के विभिन्न पहलुओं को समझने में मदद कर सकता है। इसके अलावा, हिंदी के पाठ्यक्रम में सामाजिक, ऐतिहासिक, और सांस्कृतिक विषयों को भी शामिल किया जा सकता है ताकि छात्र भारतीय समाज और संस्कृति की अधिक गहरी समझ प्राप्त कर सकें।

इस तरह, विद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम का विस्तार होने से छात्रों को भाषा के प्रति अधिक रुचि और समर्थन मिल सकता है, जिससे वे अधिक सक्षम और संवेदनशील नागरिक बन सकते हैं।

इसके अलावा, हिंदी के पाठ्यक्रम में भाषा कौशल, लेखन, पाठ्य पुस्तकों, और डिजिटल साधनों का सही उपयोग करने के लिए भी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

इस रूप में, विद्यालयों में हिंदी के पाठ्यक्रम का विस्तार बच्चों को हिंदी भाषा की समझ, व्याकरण, और संवाद में मदद कर सकता है, जिससे उनकी भाषा कौशल में सुधार हो सके।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शैक्षिक नीति 2020 का अध्ययन करते समय, हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि हिंदी भाषा का महत्व शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग करने से छात्रों की भाषा कौशल, सामाजिक समझ, और सामाजिक समरसता में सुधार होता है। यह उन्हें अपने विचारों को सही ढंग से व्यक्त करने और सामाजिक संवाद को सुगम बनाने में मदद करता है।

हिंदी भाषा का प्रयोग न केवल व्यक्तिगत स्तर पर होता है, बल्कि यह राष्ट्रीय समृद्धि और सामाजिक समरसता के लिए भी आवश्यक है। भारतीय समाज में विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के समृद्ध संगम के बावजूद, हिंदी भाषा हमें एकता की भावना देती है और देशवासियों को एक संवादशील और एकजुट बनाती है।

इसके अलावा, हिंदी भाषा का प्रयोग भारतीय संस्कृति, ऐतिहासिक विरासत, और विविधता को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भाषा हमारी भारतीय पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है और हमारे संस्कृति को विश्व में प्रस्तुत करने का माध्यम है।

सम्पूर्णतः, हिंदी भाषा की उपयोगिता और महत्व स्पष्ट है। इसके माध्यम से शिक्षा, साहित्य, और संवाद को संवारा जा सकता है और हमारे समाज को एकता, समरसता, और समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ा सकता है।

संदर्भ सूची

1. प्रो. के. एल शर्मा, दैनिक भास्कर जयपुर संस्करण, पृष्ठ संख्या 2, 24 अगस्त 2020
2. गंगवाल सुभाष, नई शिक्षा नीति 21वीं सदी की चुनौतियों का करेगी मुकाबला, दैनिक नवज्योति पृष्ठ संख्या 22 अगस्त 2020
3. राजस्थान पत्रिका नागौर, 28 जनवरी 2020, सम्पादकीय पृष्ठ
4. तन्खा वरुण, सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता, राजस्थान पत्रिका नागौर, 26 अगस्त 2020, सम्पादकीय पृष्ठ
5. सिंह दुर्गेश, क्रॉनिकल मासिक पत्रिका, मई 2020, पृष्ठ संख्या 80-81
6. खरे, डी. एम., और वर्मा, डी. बी. (संस्करण)। भारत में शिक्षा-नीति की दशा एवं दिशा। श्री विनायक प्रकाशन.2021
7. हुसैन, एम. जेड. शिक्षा ताकाणिका की रूपरेखा। रेडशशाइन प्रकाशन। प्रा. लिमिटेड.
8. ओससेबोर, जे.ई., और ओरिभाबोर, ए.सी. शिक्षण-अधिगम पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव। वर्ल्ड एजुकेटर्स फोरम में (पीपी. 1-9).2023
9. सिंह, आर. कर्मयोगी संन्यासी योगी आदित्यनाथ। प्रभात प्रकाशन.2020
10. कुमार, आर. राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू होने के पश्चात शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियाँ। इन्स्टा प्रकाशन.2020
11. कुबेर सिंह गुरुपंच. (2022). नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-चुनौतियाँ एवं समाधान। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिव्यूज एंड रिसर्च इन सोशल साइंसेज, 10(4), 199-207
12. तिवारी, -विवेकानंद. (2023). श्राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020शके आलोक में भारतीय भाषा और व्यावसायिक शिक्षा...
13. प्रकाश कुमार, 21वीं सदी की मांग पूरी करेगी नई शिक्षा नीति, आउटलुक हिंदी, 24 अगस्त 2020
14. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

